08 भाषा का संगीत-संगीत की भाषा

नलिनी रावल

संगीत ब्रह्माण्ड को देता है आत्मा
बुद्धि को देता पंख
कल्पना को देता है उड़ान,
देता हर शै को जीवनदान.

–प्लेटो

संगीत वह सब कुछ अभिव्यक्त करता है
जिसे कहा नहीं जा सकता लेकिन
जिस पर कुछ न कहना भी असम्भव है..

–विक्टर ह्यूगो

संगीत मानव जीवन का अविभाज्य अंग है। इसका प्रयोग हम मनोरंजन, सम्प्रेषण, शिक्षा आदि विभिन्न क्षेत्रों में करते हैं। इस सम्बन्ध में किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि संगीत संज्ञानात्मक प्रक्रिया में सहायक होने के साथ–साथ अधिगम के लिए आवश्यक सभी तत्वों को प्रभावित करता है।

मेरा हमेशा से यही मानना है कि भाषा को सीखने–सिखाने के लिए संगीत एक बहुत शक्तिशाली साधन है। फिर चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो, लोक संगीत हो, फिल्मी संगीत हो, पॉप संगीत हो या पढ़ते–पढ़ाते समय पृष्ठभूमि में बजने वाली हल्की–हल्की संगीत लहरियाँ हों–इन सभी से भाषा के कौशलों का विकास होता है। इसीलिए अपनी कक्षाओं में मैंने संगीत का बहुत प्रयोग किया है और इसके सकारात्मक परिणाम भी देखे हैं।

बचपन से ही मुझे संगीत में बहुत रुचि थी और घर का वातावरण संगीतपूर्ण था। जहाँ–जहाँ भी पिताजी की बदली होती हम वहाँ के संगीत और भाषा से अपने को आसानी से जोड़ लेते। रेडियो में बच्चों के कार्यक्रम में सिखाए जाने वाले 'महीने के गीत' हम चुटकियों में सीख लेते और अपनी मित्र मण्डली में इन गीतों की प्रतियोगिता करते। आपस में बात करने के लिए कभी–कभी हम बच्चे गा–गाकर बोलने का शगल भी करते। जीवविज्ञान के प्रेक्टिकल रिकार्ड में चित्र बनाते समय विविध भारती या रेडियो सीलोन पर गाने सुनना जरूरी लगता। हमें तानसेन की कहानियाँ सुनाई जाती थीं कि कैसे उनके राग मल्हार गाने से वर्षा होने लगती थी और राग दीपक गाने से दिए जल उठते थे। किंवदन्ती यह भी है कि उनके संगीत को वन्य प्राणी बहुत ध्यानपूर्वक सुनते और मन्त्रमुग्ध रह जाते थे। ऐसी थी उनके संगीत की शक्ति! इसलिए शिक्षा जगत में शिक्षिका बनकर प्रवेश करने पर वहाँ भी संगीत की भूमिका जस–की–तस बनी रही क्योंकि मैं कक्षा की प्रक्रियाओं में संगीत के महत्व एवं उसकी शक्ति से भली प्रकार से परिचित थी। इसी दौरान मैंने कुछ ऐसे लेख भी पढ़े जिनमें यह सुझाव दिया गया था कि संगीत संज्ञानात्मक प्रक्रिया में योगदान देने के साथ–साथ अधिगम को भी प्रभावित कर सकता है एवं शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि संगीत मस्तिष्क के उन विशिष्ट क्षेत्रों को उद्दीपित करता है जो स्मृति, मोटर नियन्त्रण तथा भाषा के लिए जिम्मेदार हैं।

संगीत ही क्यों?

लय,ताल,तुक और गीत–संगीत की आवृति – ये ऐसे स्वयं सिद्ध साधन हैं जो बच्चों के ध्यान और कल्पना को तो अपनी ओर खींचते हैं ही, साथ ही पढ़ाई की मूलभूत अवधारणाओं को आत्मसात करके उन्हें याद रखने में भी सहायक होते हैं। संगीत के प्रयोग से बच्चों का अधिगम हर्षपूर्ण हो जाता है और वे नई जानकारी को आसानी से आत्मसात करने में सक्षम हो जाते हैं। एक वयस्क के रूप

में भी हम इस बात का अनुभव करते हैं।

मेरे विचार से लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए संगीत का सफल प्रयोग विज्ञापनों में देखने को मिलता है। क्या हम उन लोकप्रिय "जिंगल्स" को कभी भूल सकते हैं जिनमें विज्ञापनकर्त्ताओं ने अनेक वर्षों से अपने उत्पादों के लिए संगीत का सहारा लिया है? "लाइफबॉय है जहाँ, तन्दुरुस्ती है वहाँ", "विक्स की गोली लो, खिच–खिच दूर करो", "बादशाह मसाला" तथा "निरमा...वाशिंग पाउडर निरमा", "हमारा बजाज", या "कर्रम कुर्रम लिज्जत पापड़" आदि लय–ताल निबद्ध 'जिंगल' इसी उद्देश्य" को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं कि हम उत्पादों को याद रख सकें। अगर विज्ञापनकर्त्ता संगीत की शक्ति का उपयोग उपभोक्ताओं का ध्यान अपने उत्पादों की ओर खींचने और उन्हें याद रखने के लिए कर सकते हैं तो हम शिक्षक उसी संगीत का उपयोग बच्चों का ध्यान पढ़ाई की ओर खींचने और जो कुछ पढ़ा है उसे याद रखने के लिए क्यों नहीं कर सकते? हम किसी लोक धुन, श्लोक गायन, कविता या फिर फिल्मी गाने का प्रयोग करके बच्चों को भाषायी कौशल एवं अवधारणाएँ क्यों नहीं सिखा सकते? क्योंकि–

- संगीत प्रारम्भिक भाषा कौशलों का विकास कर सकता है। जैसे गीत के बोलों को ध्यान से सुनना श्रवण कौशल का विकास कर सकता है। साथ ही इससे सुनकर सीखने की क्षमता का विकास हो सकता है।
- यह अधिगम को रोचक बनाकर कक्षा में मजेदार वातावरण का निर्माण कर सकता है।
- एकाग्रचित्तता को बढ़ा सकता है।
- स्मरणशक्ति को बढ़ाकर सीखी हुई बात का आवश्यकतानुसार स्मरण करा सकता है।
- मानसिक थकान को कम करके चिन्तन शक्ति का विकास और सृजनात्मकता में वृद्धि कर सकता है।
- बच्चों के पढ़ने, लिखने और सोचने के कौशलों में सुधार ला सकता है।
- बहुसंवेदी अधिगम में सहायता दे सकता है (जैसे श्रव्य–सुनना, दृश्य–नृत्य करना, गति संवेदना–ताली बजाना और स्पर्श–वाद्ययंत्र बजाना)।
- गीत गाने से उच्चारण शुद्ध हो सकता है।
- गीत गाने से शब्द भण्डार में वृद्धि हो सकती है।
- शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ बच्चों को विशेष रूप से दी जाने वाली शिक्षा पद्धति में संगीत महत्व पूर्ण योगदान दे सकता है।

बस इन्हीं बातों ने मुझे दिशा दी और शुरू हो गया संगीत का प्रयोग शिक्षण में!

पर शुरुआत कैसे हो?

यह सवाल परेशान करता रहा। पर सवाल हैं तो जवाब भी हैं। तो पहल करने के लिए मैंने बच्चों की पाठ्य–पुस्तक में दी गई कविताओं को सरल धुनों में गाना और बच्चों से गवाना शुरू किया। अगले दिन कक्षा में जैसे ही गाना शुरू हुआ एक बच्चा डेस्क पर थाप देने लगा। फिर क्या था। सभी बच्चे तबलची बन गए। कोई अपने टिफिन का डिब्बा बजाने लगा तो कोई चम्मच–गिलास, किसी ने ताली बजाई तो किसी ने पैरों से जमीन पर ताल देना शुरू कर दिया। शोर तो हुआ पर बड़ा आनन्द आया। तभी से कविताओं को गाकर प्रस्तुत करना एक नियमित अभ्यास बन गया, फिर चाहे वह पहली कक्षा हो या बारहवीं।

अब मैंने सोचा कि पाठ्य–पुस्तकों की कविताएँ तो ठीक, लेकिन अगर कुछ नई अवधारणाएँ सिखानी हों तो उसके लिए गीत–संगीत का प्रयोग कैसे किया जाए? तो यह बात समझ में आई कि बच्चों को जो कुछ सिखाना है उस दक्षता से सम्बन्धित तथा बच्चों के स्तर और रुचि वाले कुछ शब्दांश चुने जाएँ ताकि मैं स्वयं ही गीत लिख सकूँ। यह काम इतना कठिन भी नहीं होना चाहिए, क्योंकि आखिर इन गीतों में हम केवल इतना ही तो चाहते हैं न कि–

- वे बच्चों के लिए संगत, अर्थपूर्ण और रुचिकर हों।
- उनकी धुन सरल हो।
- वे आगामी अधिगम के लिए आधार हों।
- वे ज्ञानदायी हों एवं कौशलों का अभ्यास कराएँ।

- वे बच्चों की आयु के अनुकूल हों।

इन मापदण्डों से मुझे सहायता मिली और मैंने गीत लिखने का बीड़ा उठा ही लिया। जल्द ही मुझे इसका अवसर भी मिल गया। मुझे अपने इंग्लिश मीडियम स्कूल में कक्षा दो को दिनों के नाम सिखाने थे। तो मैंने कुछ इस तरह के शब्द चुने जैसे 'छुक–छुक–छुक–छुक चलती रेल' और 'आओ खेलें दिनों का खेल' आदि। इन शब्दों की सहायता से गीत रचा। अब एक ऐसी धुन चाहिए थी जो किसी सरल लोकगीत, बालगीत या फिर प्रसिद्ध फिल्मी गीत पर आधारित हो और रचित गीत पर ठीक बैठती हो। चूँकि यह इंग्लिश मीडियम स्कूल था, इसलिए बच्चे 'लन्दन ब्रिज इज फॉलिंग डाउन.....फॉलिंग डाउन..... फॉलिंग डाउन.. ..' इस गीत से बखूबी परिचित थे। अत: रचित गीत को इसी धुन में गाया और गवाया। इस प्रकार दिनों के नाम सिखाने के लिए जो गीत बना वह यूँ था–

छुक छुक छुक छुक चलती रेल, चलती रेल....
चलती रेल.....
छुक छुक छुक छुक चलती रेल, सरपाटी भागी
आओ खेलें दिनों का खेल.....दिनों का खेल.....
दिनों का खेल.....
आओ खेलें दिनों का खेल.....दिनों का खेल.....
दिनों का खेल.....
हर इक दिन

सोमवार को सोना छोड़ो.....सोना छोड़ो.....
सोमवार को सोना छोड़ो, सुस्ती छोड़ो
जागो–जागो स्कूल को दौड़ो....स्कूल को
दौड़ो.....
जागो–जागो स्कूल को दौड़ो,घण्टी बज गई

मंगल का दिन बड़ा निराला.....बड़ा निराला....
मंगल का दिन बड़ा निराला, कितना प्यारा
मस्ती में डूबा जग सारा.....हाँ जग सारा..... हाँ
जग सारा....
मस्ती में डूबा जग सारा, नाचो गाओ

बुधवार को बुद्धि चमकी.....बुद्धि चमकी.....
बुद्धि चमकी.....
बुधवार को बुद्धि चमकी,पढ़ लो पोथी
सब बच्चों ने ली है टुमकी.....ली है टुमकी....
.ली है टुमकी.....
सब बच्चों ने ली है टुमकी,नाचो तुम भी

बृहस्पति ने हमें सिखाया....हमें सिखाया....हमें
सिखाया.....
बृहस्पति ने हमें सिखाया, क्या है सिखाया
पेड़ों का मत करो सफाया.....नहीं सफाया.....नहीं
सफाया.....
पेड़ों का मत करो सफाया, इनको बचा लो

शुक्रवार को कहो शुक्रिया.....कहो शुक्रिया.....
.कहो शुक्रिया.....
शुक्रवार को कहो शुक्रिया, अपने प्रभु का
प्रभु ने क्या कुछ हमें दिया.....हमें दिया.....
हमें दिया.....
प्रभु ने क्या कुछ हमें दिया, सोचो सोचो

शनिवार को आधी छुट्टी .....आधी छुट्टी.....आधी
छुट्टी.....
शनिवार को आधी छुट्टी,आधी छुट्टी
कम पढ़ते हम पोथी पट्टी .....पोथी पट्टी.....पोथी
पट्टी.....
कम पढ़ते हम पोथी पट्टी,पोथी पट्टी

आखिर आया है रविवार.....हाँ रविवार.....हाँ
रविवार.....
आखिर आया है रविवार, छुट्टी छुट्टी
खेलो,खाओ,झूमो यार.....झूमो यार.....झूमो
यार.....
खेलो, खाओ, झूमो यार, छुट्टी छुट्टी

बच्चे एक कतार बनाकर नाचते–गाते, उछलते–कूदते,

ताली बजाते एक रेलगाड़ी की तरह चलने लगे और खेल–खेल में दिनों के नाम सीख गए !

बाद में मैंने मात्रा, संयुक्त व्यंजन आदि अवधारणाओं पर भी गीत लिखे और कक्षा में उनका प्रयोग किया ।

(इनमें से कुछ गीतों को अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन द्वारा निर्मित सी.डी. "हू–ब–हू" में सुना/देखा जा सकता है। फाउण्डेशन की कुछ अन्य सी.डी. भी हैं जिनमें हिन्दी भाषा सम्बन्धी कुछ और गीतों को सुना/देखा जा सकता है।)

अन्य विषयों में संगीत का प्रयोग

एक बार उत्तरप्रदेश की गणित की पाठ्य–पुस्तक में मैंने "भिन्न" पर दो गीत देखे जो इस प्रकार थे–

अ) पापा जी बाजार से आए, संग में एक सेब ले आए
चुन्नी बोली मैं खाऊँगी, मुन्नी बोली मैं खाऊँगी,
बँटवारा अब कैसे हो, सेब एक है लड़की दो, इतने में
आई नन्हीं राधा, सुझाया उसने आधा–आधा ।

ब) बाबा लाए एक तरबूज, बोले चखकर खाओ खूब, उस
घर में हैं लड़के चार, कैसे बाँटें करें विचार,
बाबा बोले आओ यार, इसके टुकड़े कर दें चार,
अलग–अलग तुम खाओ भाई, इसको ही कहते
चौथाई ।

इन गीतों से प्रेरित होकर मैंने "जोड़" पर एक गीत लिखा और धुन वही रखी.... लन्दन ब्रिज इज फॉलिंग डाउन... ...वाली ।

जोड़ का गीत

ठेलमठेल भई ठेलमठेल,
ठेलमठेल भई ठेलमठेल,

आओ खेलें जोड़ का खेल,
आओ खेलें जोड़ का खेल,

एक है मुर्गी अण्डे चार,
एक है मुर्गी अण्डे चार,

कुल हैं कितने बोलो यार ?
हो गए पाँच, सुन मेरे यार ।

गणित पढ़ाने वाली मेरी सहेली को यह गीत बहुत पसन्द आया और फिर अन्य विषयों की शिक्षिकाओं को भी लगा कि उन्हें भी अपने–अपने विषयों में इस प्रकार का प्रयास करना चाहिए। उनके उत्साह को देखकर मुझे इस बात का विश्वास हो गया कि संगीत का प्रयोग सभी विषयों के शिक्षण–अधिगम के लिए किया जा सकता है।

2001–2002 के आसपास जब कक्षा में पढ़ने–पढ़ाने के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग शुरू हुआ तब तो बच्चों को और भी मजा आया। कम्प्यूटर लैब में जाकर अपनी आवाज में गाना रिकार्ड करना, उसका प्रयोग अपने पॉवर पॉइण्ट प्रेजेण्टेशन में करना, खुद ही गाने लिखने और उसे संगीतबद्ध करने का प्रयास करना, संगत के लिए हारमोनियम, तबला, मृदंग, कैशियो, वायलिन आदि का प्रयोग करना–इन सबसे बच्चों की सृजनात्मकता को नए आयाम मिले और मुझे मिली अपूर्व तृप्ति।

कभी–कभी ऐसा भी हुआ कि गीत लिखने या उसकी धुन बनाने में मुश्किल हुई। ऐसे में मैंने अपने अक्षय बैंक यानी बच्चों का सहारा लिया। उन्हें मैं विषय दे देती और छोट–छोटे गीत लिखने को कहती। चार–पाँच दिनों के बाद जो गीत सामने आते उन्हें मिला–जुलाकर एक अन्तिम रूप दे दिया जाता। इसमें बच्चे भी मदद करते। जो बच्चे गीत नहीं लिख पाते थे वे धुन बनाने की कोशिश करते। अपने जाने–पहचाने गीतों की धुनों पर वे इन गीतों को बिठाते। अपने लिखे और स्वरबद्ध किए हुए गीतों को गाने में बच्चों को जितना आनन्द मिलता उतना ही गर्व भी महसूस होता। बच्चों की प्रतिभा को मुखर करने का कितना सशक्त साधन था यह !

यह तो हुई गीत लिखने, धुन बनाने और उन्हें गाने की बात। इसके अलावा भी मैंने संगीत का प्रयोग अपनी कक्षाओं में किया है। एकाध उदाहरण देकर बात स्पष्ट करना चाहूँगी। जैसे शास्त्रीय वाद्य संगीत का एक छोटा–सा टुकड़ा कक्षा में बजाना और बच्चों से कहना कि उसे सुनकर उनके मन में जो भी विशेषण शब्द आएँ उन्हें लिख लें। बाद में वे

उन शब्दों को आपस में पढ़कर सुनाते, उसके अर्थ और विभिन्न प्रयोगों पर बातचीत करते और अपना शब्द ज्ञान बढ़ाते। अगर बड़ी कक्षा होती तो अपने लिखे हुए शब्दों में जो सूक्ष्म भेद है, उस पर चर्चा करने को कहा जाता जैसे पीड़ा–व्यथा या शान्त–शान्ति का बारीक अन्तर।

एक गतिविधि और भी है जो बच्चों को बहुत पसन्द है। किसी गीत को कक्षा में एक बार बजाकर बच्चों से उसे ध्यानपूर्वक सुनने को कहना। बाद में उन्हें इसी गाने का हैंडआउट देना जिसमें बीच–बीच में खाली स्थान हों। बच्चे अपनी याददाश्त का प्रयोग करके इन रिक्त स्थानों को भरते और फिर उस गीत को गाने का प्रयास करते। इसी में जरा –सा परिवर्तन करके मैं कुछ बड़े बच्चों से कहती कि वे गीत में आए मूल शब्दों के स्थान पर कोई और संगत शब्द रखें। लेकिन तुक–मात्रा आदि का ध्यान रखें। इस प्रयास ने अनेक आशु–कवियों को भी जन्म दिया !

इसी दौरान हमने स्कूल में प्रार्थना सभा के शुरू होने से पहले, मिड डे मील के दौरान और छुट्टी की घण्टी बजने के बाद हल्का–हल्का संगीत बजाना भी प्रारम्भ कर दिया। इस प्रयोग को भी बच्चों और अभिभावकों ने बहुत सराहा।

भाषा शिक्षण में संगीत का प्रयोग तरह–तरह से किया जा सकता है। हमें उन तरीकों का पता लगाकर अपने सन्दर्भ के अनुसार सर्वाधिक उपयुक्त तरीके को अपनाना चाहिए। यकीन मानिए, ऐसा करने से विद्यार्थी अपनी भाषा की कक्षा और शिक्षक को कभी नहीं भूलेंगे क्योंकि ये गीत उनके मानस में आने वाले कई वर्षों तक गुंजायमान रहेंगे।

तो साथियों, अगर संगीत, अधिगम की शुरुआत करने, बच्चे की रुचि और उसके सोचने की क्षमता को बढ़ाने में सक्षम है तो फिर इन्तजार किस बात का? बाँहें पसारिए और समेट लीजिए इस असीम शक्ति को अपने में !

संगीत कला का वह रूप है जो भाषा से भी श्रेष्ठ है –हर्बी हैंकॉक।

संगीत भाषा की आत्मा है –मैक्स हींडल।

(यह लेख वर्ष 2010 – 11 में पहली बार *www.teachersofindia.org* पर प्रकाशित हुआ था।)

नलिनी रावल *अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में 2003 से सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं तथा फाउण्डेशन के सभी विभागों को हिन्दी भाषा सम्बन्धी सहायता प्रदान करती हैं। उन्होंने मैसूर विश्वविद्यालय से हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की है। मूलतः वे शिक्षिका हैं और उन्हें केन्द्रीय विद्यालय समेत कई अन्य प्रसिद्ध निजी विद्यालयों में हिन्दी अध्यापन करने का 31 साल का दीर्घ अनुभव है। वे हाईस्कूल तथा धन दो की कक्षाओं को हिन्दी पढ़ाती रही हैं। उन्हें अध्यापन कार्य बहुत प्रिय है तथा भाषा शिक्षण हेतु वे अभिनव तरीकों को अपनाती रही हैं। उनके लेख,कविताएँ केन्द्रीय विद्यालय संगठन की पत्रिकाओं तथा हिन्दी की अन्य पत्र–पत्रिकाओं में छप चुके हैं। उनकी वार्ताएँ आकाशवाणी के भोपाल एवं बंगलौर केन्द्रों से प्रसारित हो चुकी हैं। बच्चे की भाषायी क्षमताओं ने उन्हें सदा ही आकर्षित किया किया है तथा उनका मानना है कि "बच्चा उस समय और सन्दर्भ में भाषा सीखता है जब वास्तव में उसका ध्यान भाषा पर केन्द्रित नहीं होता।" उनसे nalini.ravel@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।*